प्रत्यक्षता की ओर बढ़ते कदम

-राजयोगी ब्र.कु.सूर्य माउंट आबू ...

पवित्रता की क्रांति से ही शांति का उपहार मिलेगा,

हर मानव पावन होगा, खुशियों का तब द्वार खुलेगा।

सतयुग से जब दैवी-सभ्यता का प्रारम्भ हुआ, तब भी मनुष्यात्मायें सम्पूर्ण थीं और अब कलियुग के अन्त में आत्माओं की सम्पूर्णता के साथ ही यह खेल पूर्ण हो जायेगा। परन्तु उससे पूर्व मनुष्य को जिस काल से गुजरना होगा, वह अत्यन्त पीड़ादायक भी होगा तो अत्यन्त आनन्ददायक भी। कोई सरसों की भांति पिस जायेगा तो किसी को मन की मुराद मिल जायेगी। कोई पश्चाताप के क्षण गुजारेगा तो किसी के मन में प्राप्तियों की, खुशियों की शहनाइयां बजेंगी।

जब धर्म तो रह जाते हैं परन्तु धर्म की शक्ति लोप हो जाती है, तब सबसे शक्तिशाली आदि सनातन देवी-देवता धर्म की पुन:स्थापना करते हैं - वही धर्म-रक्षक परमपिता परमात्मा। अब तो धर्म स्वयं अपनी ही रक्षा करने में अक्षम है, तब भला वह मनुष्यों की रक्षा क्या करेगा? धर्म में बल अवश्य है, परन्तु किस धर्म में? सभी धर्मों की मूल शक्ति अध्यात्म-शक्ति है, पवित्रता की शक्ति है। जब किसी भी धर्म से यह मूल शक्ति नष्ट हो जाती है, तब वह धर्म भी प्रभावहीन हो जाता है। अब परमात्मा ने स्वयं ब्राह्मण धर्म की पुनर्स्थापना करके, राजयोग व पवित्रता के बल से अनेक आत्माओं को अध्यात्म बल से सम्पन्न किया है। परमात्मा का इस वसुधा पर स्वर्ग रचने का कार्य अब इस आध्यात्मिक क्रांति के साथ ही पूर्ण हो जायेगा।

आध्यात्मिक क्रांति की शुरुआत - परमात्मा ने ब्रह्मा के माध्यम द्वारा सभी को राजयोग सिखाया। इस योग के बल से समस्त विश्व में जो आत्मायें माया पर सम्पूर्ण विजय प्राप्त कर लेती है, उन्हें विजयी-रत्न कहा जाता है। उनकी ही यादगार में भक्त वैजयन्ती माला का स्मरण करते हैं। ये आत्मायें काम, क्रोध व अहंकार आदि महाशत्रुओं को अपने अधीन कर लेती है। महाविनाश से पूर्व ये सभी विजयी - रत्न सम्पूर्ण विश्व में प्रसिद्ध होंगे। सभी धर्मों के लोग इन्हें पहचानेंगे। इनमें भी अत्यधिक शक्तिशाली हैं पहले अष्ट-रत्न।

अंत में इन शक्तिशाली आत्माओं से सभी को अपने-अपने इष्ट देव के साक्षात्कार होंगे और भावनावश इन्हें ही लोग धरती के भगवान स्वीकार कर लेंगे और तभी से भक्तों में भर जायेंगे भगवान के सगुण रूप की पूजा के संस्कार। संसार की सभी घटनाओं पर इन शक्तिशाली आत्माओं का ही सम्पूर्ण नियंत्रण होगा। ये सभी मायाजीत आत्माएं इस वसुंधरा पर अध्यात्म की धारा प्रवाहित करेंगी। इनका अपना स्वरूप, सत्य का ऐसा प्रत्यक्ष प्रमाण होगा कि धर्मों की कट्टरता वाले लोग, संसार के सभी दार्शनिक व विद्वान, गुरु और आचार्य - सभी इनके समक्ष नतमस्तक हो जायेंगे। इनके समक्ष किसी का भी अहंकार टिक नहीं पायेगा, कोई इनसे शास्त्रार्थ करने का भी साहस नहीं करेगा।

हाहाकार के साथ जयजयकार - जब इस धरा पर चीख-पुकार, करूण-क्रंदन, हाहाकार और विलाप, रोने और चिल्लाने की आवाजें चहुं ओर सुनाई देंगी, तभी प्रख्यात होने प्रारंभ होंगे ये विजयी-रत्न, ये सृष्टि की आदि पूर्वज महान आत्मायें! इनके द्वारा सभी को शांति व मुक्ति का वरदान प्राप्त होगा। फलत: चारों ओर जयजयकार के नारे गूंज उठेंगे कि - आ गये हैं शांति के अवतार, इष्ट देव प्रकट हुए हैं! और इस प्रकार विनाश के अंधकार में तड़पती रूहों को सत्य का प्रकाश दिखाई देगा। इस दुनिया के महाविनाश की भविष्यवाणियां तो कई भविष्य-वक्ता कर रहे हैं। परन्तु हम कर रहे हैं स्वर्ग के आगमन की भविष्यवाणी। इन शक्तिशाली आत्माओं के द्वारा विश्व के कोने-कोने में आवाज बुलंद होगा - 'हमारे परमपिता हमें घर वापस ले जाने के लिए आ चुके हैं!' कभी कहीं तो कभी कहीं ये आत्मायें सतधर्म-ध्वज लहरायेगी, आध्यात्मिक क्रांति की अविनाशी मशाल को प्रज्ज्वलित करेंगी।

महाविनाश के विकराल काल में चारों ओर भय, अविश्वास, असुरक्षा और बेचैनी का माहौल बन जायेगा। तब विशेष रूप से ये विजयी-रत्न फरिश्ते बनकर सभी को ईश्वर का संदेश देंगे, अभय-दान देंगे, सुरक्षा प्रदान करेंगे और अपनी उपस्थिति से उन्हें चिन्ता-मुक्त करेंगे।

कहां हैं ये महान आत्माएं? - ये विजयी-रत्न आत्मायें, विश्व सृष्टा रचित इस अविनाशी रूद्र ज्ञान यज्ञ में उपस्थित हैं। ये अपनी तपस्या के द्वारा फरिश्ता स्वरूप धारण करते जा रहे हैं। इनकी पवित्रता विश्व को पुन: नव-जीवन देगी, मनुष्य को नव दिशा देगी। उनके शुद्ध व शुभ वायब्रेशन्स अब भी अनेकों के जीवन का सहारा है। इन विघ्न-विनाशक रूहों के द्वारा अब भी अनेकों के विघ्न नष्ट होते हैं। आने वाले समय में इनकी पावन दृष्टि में इतना तेज होगा कि जिन पर भी ये नजर डालेंगे उन्हें अपने सत्य स्वरूप का, अपने भविष्य का दीदार होने लगेगा। जहां इनकी उपस्थिति होगी वहां विपदायें शांत हो जायेंगी और चैन की बंशी बजने लगेगी।

भक्तों को इष्ट मिलेंगे - हमें साक्षात् भगवान मिले, उन्होंने हमारी जन्म-जन्म की मनोकामनायें पूर्ण की, हमें अनेक वरदानों से सुसज्जित किया। ठीक उसी तरह ये होवनहार इष्ट देव सभी भक्तों को प्राप्त होंगे। जन्म-जन्म जिस-जिस भक्त ने जिस-जिस इष्ट की आराधना की, अब उनकी भक्ति का काल पूर्ण होने को आया है और अब शीघ्र ही उन सभी भक्तों को अपने-अपने इष्ट मिल जायेंगे। ये इष्ट उनकी सभी मनोकामना पूर्ण करेंगे, उन्हें वरदान देंगे, शांति देंगे। तो जो आत्मायें स्वयं को इष्ट देव जानकार निष्काम बनेंगी और अपने परमपिता से सर्व प्राप्तियों की अनुभूति करेंगी वही कुछ समय के बाद भक्तों की मनोकामनायें पूर्ण कर सकेंगी।

पवित्रता की क्रांति आयेगी - जैसे अब चारों ओर विकारों की आंधी चल रही है, वैसे ही कुछ ही समय के बाद इस भूमण्डल पर पवित्रता की शीतल पवन बहेगी। जैसे आज मनुष्य विकारों का क्षण-भंगुर सुख लेना चाहता है, वैसे ही प्रत्येक मनुष्य पवित्र बनने का इच्छुक होगा। क्योंकि अब सृष्टि-चक्र घूमकर वहीं आ गया है, जहां से ये प्रारंभ हुआ था। इसलिए सभी आत्माओं के मूल संस्कार पुन: जागृत होंगे। वह दिन दूर नहीं जबकि जन-जन के मन में मनोविकारों के प्रति वैराग्य उत्पन्न होगा और पवित्रता से प्रेम बढ़ेगा।

परन्तु यह असंभव प्रतीत होने वाला महापरिवर्तन इन पवित्रता की शक्ति से सम्पन्न आत्माओं के शक्तिशाली पवित्र वायब्रेशन्स के कारण ही संभव होगा। ये विजयी-रत्न पवित्रता के सुख में इतने संतुष्ट होंगे कि इनके प्रभाव से सभी को सहज ही विकारों से बेचैनी का आभास होने लगेगा। इनके पवित्रता के प्रकम्पन अपवित्रता के प्रदूषण को छिन्न-भिन्न करने लगेंगे। इस प्रकार विकारों के प्रति वैराग्य की लहर फैलाकर ये महानात्मायें सभी को पवित्र बनायेंगी। हर मनुष्य पवित्र बनना चाहेगा और रावण राज्य सदा के लिए लुप्त हो जायेगा।

सम्पूर्णता की ओर - गुप्त रूप से प्रत्यक्षता की तैयारी करते हुए ये विजयी-रत्न सम्पूर्णता के मार्ग पर तेजी से चल रहे हैं। यह पहचानना सरल काम नहीं कि वे कौन है? वे अपनी श्रेष्ठ स्थिति द्वारा भिन्न-भिन्न समय पर व भिन्न-भिन्न स्थान पर स्वत: ही प्रत्यक्ष होंगे। ये सभी प्रकृति के मालिक रूप में प्रख्यात होंगे। ये अपनी पवित्रता के द्वारा प्रकृति को शुद्ध करेंगे। सम्पूर्ण विश्व इन्हें पहचानेगा व मानेगा। अंतिम समय इनके ऊपर समस्त विश्व पुष्पों की वर्षा करेगा। इनके प्रकाश में सभी एक बार स्वयं को व अपने परमपिता को पहचानकर, उनसे 'मेरा बाबा' - यह स्नेह का नाता जोड़ेंगे और इसी कारण उन्हें मुक्ति का अधिकार प्राप्त होगा।

वलसाड। मुख्यमंत्री नरेन्द्र मोदी को ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् पुष्प भेंट करते हुए ब्र.कु.रंजन साथ में हैं ब्र.कु.रोहित।

सुरत। 'मूल्यशिक्षा एवं आध्यात्मिकता' कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए प्रिंसीपल राजेश शिंदे, हरेश भट्टी, ब्र.कु.सविता, ब्र.कु.फाल्गुनी एवं ब्र.कु.उमेश।

बरगड़ (उड़ीसा)। विकास जुनियर कॉलेज में 'माइण्ड मेमोरी मैनेजमेंट' कार्यक्रम को संबोधित करते हुए ब्र.कु.स्वामीनाथन।

मल्कापुर। 'अपघात सुरक्षित अभियान' कार्यक्रम को संबोधित करने के पश्चात् डिपो मैनेजर आर.टी.आयरेकर को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.वंदना साथ में हैं ब्र.कु.सुरभि।

गोधरा। 'अमृत महोत्सव' का दीप प्रज्ज्वलित कर उद्घाटन करते हुए रेड क्रॉस के केनी स्वोरेश, पत्रकार परमानंद रावल, डी.एफ.ओ. नयनकुमार देसाई, ब्र.कु.सुरेखा तथा अन्य।

नवसारी। 'वन गॉड वन वर्ल्ड फैमिली' शोभायात्रा का उद्घाटन करने के पश्चात् ग्रुप फोटो में हैं आदि जाति विकास एवं वन कल्याण मंत्री मंगु भाई पटेल, ब्र.कु.भानु एवं ब्र.कु.गीता।